विषय-सूची

परिचय..... vii

पारिवारिक पृष्ठभूमि 1
बचपन 5
जागरण के पल..... 13
अरुणाचल की ओर प्रस्थान..... 21
अरुणाचल में श्री रमण का आरंभिक समय 39
शिवप्रकाशम् पिल्लै और 'मैं कौन हूं?' 43
अरुणाचल में श्री रमण का मध्यवर्ती समय..... 65
बच्चों और पशु-पक्षियों के प्रति श्री रमण का प्रेम..... 71
श्री रमण से मिलने वाले महान संत-मनीषी..... 83
अरूणाचल में श्री रमण का बाद वाला समय..... 93
अरुणाचल का महत्व 109

परिशिष्ट

श्री रमण महर्षि की प्रमुख शिक्षाएं..... 113
'शुद्ध सत्व' मयूर 117
आश्रम के कार्यकलाप 121

संदर्भ-ग्रंथ सूची..... 125
आभार..... 127

पावन अरुणाचल पर्वत पर तनिक विश्राम के लिए रुके दो तीर्थ यात्री दूर से तिरुवण्णामलै मंदिर-नगरी के अनूठे दृश्य को निहारते हुए।

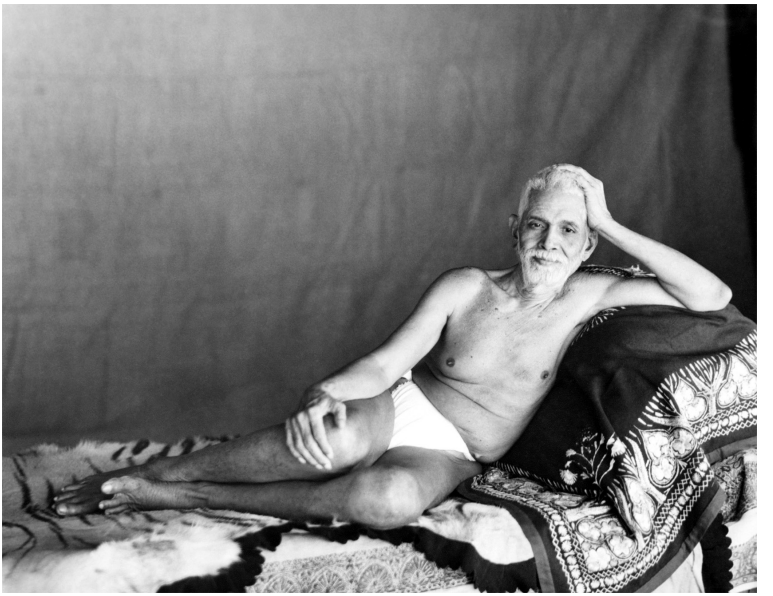

आश्रम के पुराने हॉल में विश्राम करते श्री रमण महर्षि

परिचय

पूरे विश्व में, श्री भगवान रमण महर्षि को न केवल एक महान ज्ञान प्रदाता के रूप में देखा जाता है बल्कि उन्हें परम गुरु भी माना जाता है। काल-चक्र बताता है कि लगभग हर हज़ार वर्ष बाद परम प्रज्ञा से युक्त कोई परम गुरु इस पृथ्वी पर प्रकट होता आया है और आगे आने वाले हज़ार वर्षों के लिए वह एक नयी धर्मसंहिता रच जाता है। सांसारिक समस्याओं के मकड़जाल में उलझे हुए और बारंबार जन्म लेने व मरने के दुखदायी व अंतहीन दुश्चक्र में फंसे हुए मनुष्यों की मदद करने के लिए, उन्हें जगाने तथा इस बंधन से स्वयं को मुक्त करने के वास्ते प्रेरणा देने के लिए, ईश्वर की ओर से आने वाली यह एक दैवी कृपा होती है।

पिछली बार इस ऐतिहासिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए सातवीं-आठवीं शताब्दी में पूजनीय आदि शंकर का अवतरण हुआ था। उन्होंने अद्वैत-वेदांत में निहित उच्च ज्ञान के उन शाश्वत सिद्धांतों की व्याख्या की थी जिन पर चलते हुए आत्म-बोध तक पहुंचा जा सकता है। मुनि व्यास द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र पर की गई अपनी टीकाओं में उन्होंने अद्वैत-वैदिक तथा उपनिषदों के ज्ञान को

सुबोध व सुगम ढंग से सुव्यवस्थित करके उसे संहिताबद्ध किया था ताकि तत्कालीन तथा भविष्यकालीन जन उसे सरलता से आत्मसात कर पाएं। वर्तमानकाल में भगवान श्री रमण का अवतरण हुआ है जो कि शंकर की शिक्षाओं को आगे तो बढ़ा ही रहे हैं लेकिन साथ ही आज की पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियों के लिहाज़ से उनमें कुछ महत्वपूर्ण नूतनता का संयोजन भी कर रहे हैं।

ख़ास बात यह है कि महर्षि ने आत्म-विचार (*'सैल्फ़-एंक्वायरी'*) के महान विज्ञान को बहुत सुगम बना दिया है और उसे सर्वसुलभ कर दिया है। यह अब कोई ऐसी गोपनीय बात नहीं रह गई है जिसे केवल पारंपरिक गुरुओं के दीक्षा-प्राप्त ब्राह्मण शिष्यों को ही बतायी जा सकती हो। श्री भगवान ने अपनी शिक्षा की परिधि केवल एशिया तक ही सीमित नहीं रखी है बल्कि इसे पश्चिम जगत तक भी पहुंचने दिया है और स्वाभाविक है कि इसीलिए उन्हें जगद्गुरु के रूप में जाना जाता है।

महर्षि अपने अद्वैत के और आत्मज्ञान के इस ज्ञान को मौन द्वारा संचारित करने की क्षमता रखते थे – उनमें यह एक ऐसी दुर्लभ आध्यात्मिक शक्ति थी जिसकी परंपरा उस दिव्य आद्यगुरु भगवान दक्षिणमूर्ति ने आरंभ की थी जिन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है। महर्षि पशु-पक्षियों के साथ सहज भाव से वार्तालाप कर सकते थे – ईश्वर प्रदत्त उन्हें यह एक ऐसा उपहार था जो कि किसी-किसी संत को ही सुलभ हो पाता है।

उन्होंने एक ऐसा निर्दोष व निष्पाप जीवन जिया कि उनके गौरवमय चरित्र पर कभी कोई आंच नहीं आई। जो कोई भी उनके समीप आता था उसके लिए वह प्रेम, प्रज्ञा, आस्था और करुणा का एक सतसागर ही हुआ करते थे।

अपनी अवर्णनीय जीवंतता और उपदेशों द्वारा अद्वैत के उत्कृष्ट सिद्धांतों के प्रति उन्होंने पूरे विश्व की रुचि को जगा दिया है। उन्होंने एक ऐसी दावानल को प्रज्वलित कर दिया है जो कि सांसारिकता के उस घने जंगल को प्रबलतापूर्वक भस्मीभूत कर रही है जिसने कि मानवजाति को अपने पाश में बांध रखा है।

उनके इस संक्षिप्त जीवनचरित में मेरा प्रयास होगा कि मैं उनकी ऐतिहासिक महानता का चित्रण कर पाऊं और मानवजाति के आध्यात्मिक ज्ञान को उन्होंने जिस मुकाम तक पहुंचाया है उसका वर्णन कर सकूं। इसके अलावा, मैं इस व्याकुल और व्यथित धरती पर मानव दशा की पीड़ा को कम करने के लिए किए गए उनके महत्वपूर्ण योगदान को भी सारांश रूप में प्रस्तुत करूंगा।

मैं यह भी आशा करता हूं कि उनकी महान शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों को मैं उन पाठकों के हित के लिए स्पष्ट कर पाऊंगा जो कि अपने वास्तविक स्व की, आत्मा की प्रकृति के सत्य को, और जिस आभासी संसार में हम जी रहे हैं, उसको जानने के प्रति गंभीर जिज्ञासा रखते हैं।

— एलेन जैकब्स
अध्यक्ष, रमण महर्षि फ़ाउंडेशन, यूके
लंदन, जनवरी 2010

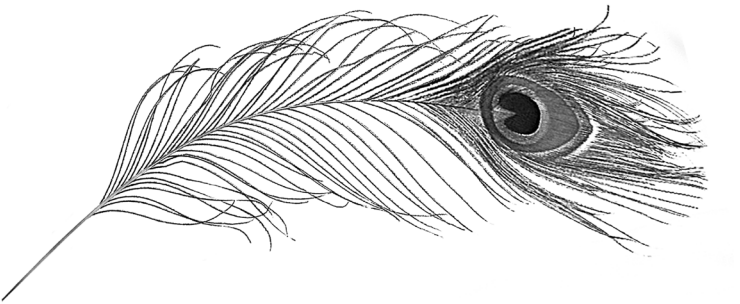

अध्याय एक

पारिवारिक पृष्ठभूमि

''हे अरुणाचल! तुम और मैं इस तरह से एकाकार और अपृथक हो जाएं जैसे अलगु और सुंदरम!''

– द मैरिटल गारलैंड ऑफ़ लैटर्स, अंक 2

नटराज के रूप में भगवान शिव के दिव्य नृत्य-उत्सव, यानी आरुद्रा दर्शनम् के दिनों के आयोजन के दौरान सोमवार, 30 दिसंबर 1879 की अर्ध रात्रि के एक घंटे उपरांत एक पुरातन व प्रतिष्ठित ब्राह्मण के घर में एक बालक का जन्म हुआ जो आगे चल कर विश्व में श्री भगवान रमण महर्षि के रूप में विख्यात हुआ। पुराणों के अनुसार, इस दिन भगवान शिव अपने प्रिय भक्तों, गौतम और पतंजलि, के समक्ष प्रकट हुए थे, इसलिए यह दिन हमेशा ही एक शुभ दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। सुन्दरम और अलगु के घर में जन्मे इस स्वस्थ बालक का नाम उनके कुल देवता के नाम पर वेंकटरमण रखा गया।

वेंकटरमण के पिता सुन्दरम तमिलनाडु में तिरुचुली नगर के मंदिर में कोर्ट-प्लीडर के रूप में नियुक्त थे और एक उच्च प्रतिष्ठित

व सम्पन्न ब्राह्मण थे। उनके तीन पुत्रों में वेंकटरमण दूसरे स्थान पर थे। सुन्दरम के पिता, नागस्वामी अय्यर, गोथ्रम वंश से थे जो कि ऋषि पराशर से चला आ रहा था और उसी में महान ऋषि व्यास का भी जन्म हुआ था। नागस्वामी के पांच पुत्र थे – वेंकटेश्वरन, सुन्दरम्, सुब्बैयब और नेल्लियप्प अय्यर, और एक पुत्री थी जिसका नाम था लक्ष्मी अम्माल। अपने पिता के देहान्त के उपरान्त वेंकटेश ने कुछ समय तक परिवार की ज़िम्मेदारी को वहन किया लेकिन फिर वह सन्यासी हो गए। तब दूसरे पुत्र सुन्दरम् ने परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली थी।

वेंकटरमण की माता का नाम अलगम्माल था जो कि बाद में अपने ही सत् से अध्यात्म की बहुत उच्च स्थिति तक पहुंच गई थीं। यह इत्तफ़ाक नहीं तो और क्या है कि माता और पिता दोनों के ही नाम का अर्थ है 'सुन्दर', माता का तमिल में और पिता का संस्कृत में। तिरुचुली एक पावन स्थान है और इसकी पुष्टि पुराणों में भी की गई है जहां कि एक के बाद एक आने वाली जलप्रलय सरीखी तीन बाढ़ों से इस नगर को बचाने के लिए भगवान शिव चमत्कारिक रूप से स्वयं आगे आए थे।

वेंकटरमण के माता और पिता दोनों ही भगवान शिव के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा के लिए विख्यात थे। उनकी माता को अनेक ऐसे भजन आते थे जो कि अद्वैत के सत्य से सराबोर होते थे। उन भजनों को गाने के लिए ईश्वर ने उन्हें बहुत आंनददायी सुरीला स्वर भी प्रदान किया था। अपने इस पुत्र के जन्म से जुड़े सूत्र जोड़ते हुए उन्होंने बताया था कि गर्भावस्था के दौरान उनके पेट में बहुत ही असाधारण दर्द होता था। इसका अर्थ यह निकाला जाता था कि कोई तेजस्वी उनके गर्भ में आया है। उन दिनों लोग उन्हें बताते थे कि उनमें एक ऐसी द्युति व दीप्ति दीखती थी जो

वेंकटरमण के पिता सुन्दरम् अय्यर

वेंकटरमण की माता अलगम्माल

कि पहले उनमें कभी दिखाई नहीं दी थी। इस बालक के जन्म के समय दाई ने एक चौंधिया देने वाले प्रकाश को महसूस किया था। उस अद्‌भुत दृश्य को देख कर उसने अलगम्माल से कहा था, ''आज जिसने तुम्हारे घर में जन्म लिया है वह कोई दिव्य आत्मा है!'' उसकी इस बात ने उस समय बड़े अचरज और अटकल का वातावरण बना दिया थाः लेकिन यह एक ऐसी भविष्यवाणी थी जो कि बालक के बड़े होने के साथ-साथ पूरी होती चली गई।

वेंकटरमण का लालन-पालन उनके बड़े भाई नागस्वामी और सुन्दरम् की स्वर्गीय बहन लक्ष्मी अम्माल के दो बच्चों, रामस्वामी और मीनाक्षी के साथ हुआ था।

1892 को कम उम्र में ही सुन्दरम् अय्यर का देहांत हो गया और अपने पीछे वे तीन पुत्र और एक पुत्री छोड़ गए – चौदह वर्ष का नागस्वामी, बारह वर्ष के वेंकटरमण, छः वर्ष का नागसुन्दरम् और चार वर्ष की अलमेलु। आगे आने वाले पृष्ठों में हम देखेंगे कि किस प्रकार इस कुलीन परिवार ने वेंकटरमण का उल्लेखनीय और ऐतिहासिक भवितव्य रचने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

अध्याय दो

बचपन

''हे अरुणाचल, जन्म लेने वाले समस्त जीव जो तेरे निकट कुछ पल भी रह जाते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं। यह आश्चर्यजनक है! इस हृदय में तू ही आत्मस्वरूप 'मैं' के रूप में नर्तन करता है। हे प्रभु, ये सब लोग तुझे ही 'हृदय' कहते हैं।''

— अरुणाचल पंचरत्नम्, अंक 2

बालक वेंकटरमण का बचपन किसी भी अन्य बालक के बचपन की भांति ही सामान्य तौर पर बीता। वह एक सुडौल देह वाला हृष्ट-पुष्ट लड़का था, और पांच वर्ष का होने तक वह अपनी ममतामयी माता का दुग्धपान करता रहा था।

उनके साथ एक चचेरी बहन, मीनाक्षी, भी रहा करती थी जिसकी मां अब नहीं रही थी। वेंकटरमण की मां उसे भी अपना दुग्धपान कराया करती थी। यह बात बाद में पता चली कि बालक वेंकटरमण ने अपनी चचेरी बहन मीनाक्षी की दुर्भाग्यपूर्ण असामयिक मृत्यु के समय एक बार तो उसे पुनः जीवित कर दिया था। यह बालक उसके पास गया और उसे छुआ। वह उठ बैठी और चकित

तिरुचुली का वह सेतुपति ऐलिमैंट्री स्कूल जिसमें बालक वेंकटरमण पढ़ते थे।

होकर बोली, ''कौन है जिसने मुझे छुआ है?'' यह घटना तब हुई थी जब वह अपने जीवन की अंतिम सांस ले रही थी।

बालक के रूप में वेंकटरमण अत्यंत स्नेही, मित्रतापूर्ण और भले स्वभाव वाले थे। गांव में सभी को वह बहुत प्रिय थे। अपने मुक्त हृदय, मिलनसारिता और विनोदी स्वभाव के कारण वह हमेशा प्रशंसा के पात्र रहे। उन्होंने तीन वर्ष तक तिरुचुली के सेतुपति ऐलिमैंट्री स्कूल में पढ़ाई की जहां उन्होंने तमिल, अंग्रेज़ी और अंकगणित का आरंभिक ज्ञान प्राप्त किया। बालपन में उनके बहुत सारे संगी-साथी हुआ करते थे जिनमें से उनके पड़ोसी का बेटा चेल्लम और बेटी सुब्बुकुट्टी उनके घनिष्ठ मित्र रहे थे। उनकी काकी वेंकटरमण को बहुत पसंद करती थी और उन्हें अक्सर अपने घर बुलाया करती थी। वहां एक और लड़का भी था जिसका नाम कथिरवेलु था, उसका नाम बालक वेंकटरमण की नोटबुक में लिखा हुआ अभी भी देखा जा सकता है।

जब वह ग्यारह वर्ष के हो गए तब उन्हें डिंडीगुल के सैकेंडरी स्कूल में भेज दिया गया जहां उनके बड़े भाई नागस्वामी पहले से ही पढ़ रहे थे जिन्हें वहां मेहनती छात्र माना जाता था। वेंकटरमण हालांकि मेधावी छात्र थे लेकिन स्कूल के काम-काज में वह कोई अधिक रुचि नहीं लेते थे। उनकी रुचि फुटबॉल और दूसरे खेलों में अधिक रहती थी। वहां भूमिनाथेश्वर मंदिर के लंबे-चौड़े गलियारों और उसके चारों तरफ़ के हरे-भरे खुले मैदानों के बीच में स्थित शूल तीर्थ नामक मंदिर के ताल में वह और उनके मित्र अक्सर डुबकियां लगाया करते थे। उनका हृदय सचमुच करुणावान था। यह बात उनके द्वारा बाद में सुनाई गई इस कथा से व्यक्त होती है जब उन्होंने पड़ोस के एक लड़के की मदद की थी – ''एक दिन एक लड़का जो मुझसे कोई तीन वर्ष छोटा रहा होगा, एक गन्ना

भूमिनाथेश्वर का वह ताल जिसमें बालक वेंकटरमण अपने मित्रों के साथ तैराकी किया करते थे।

और एक चाकू लेकर आया। चूंकि वह स्वयं गन्ना नहीं काट सकता था इसलिए उसने अपने भाईयों से मदद मांगी थी लेकिन उन्होंने उसकी बात को सुना-अनसुना कर दिया था। मुझे उस लड़के पर तरस आया और मैंने गन्ना लेकर उसे काटने की कोशिश की, लेकिन ऐसा करते समय खुद मेरी उंगली कट गई और उससे खून बहने लगा। वह लड़का रोने लगा, फिर भी मैंने किसी तरह उस गन्ने की गंडेरियां बना ही दीं। एक गीले कपड़े से मैंने अपनी उंगली कस कर बांध ली थी, फिर भी खून तत्काल नहीं रुक पाया था।''

वेंकटरमण का उपनयन संस्कार उनकी आठ वर्ष की आयु में कर दिया गया था।

उस परिवार में एक उपाख्यान कहा जाता है जो कि इस बालक के शुभ शकुन वाले बचपन की ओर बिल्कुल सही संकेत करता है। बहुत पहले की बात है, एक दिन एक साधु उनके पैतृक

घर पर भिक्षा मांगने आया था। परंपरा के विपरीत, दुर्भाग्यवश, न तो उसे उचित सम्मान दिया गया और न ही भोजन दिया गया। साधु ने वहीं यह श्राप दे दिया था कि भविष्य में इस परिवार की हर पीढ़ी का कोई एक सदस्य अवश्य ही उसी की तरह घर छोड़ कर भटकता रहेगा और भिक्षाटन करेगा। यह श्राप सही सिद्ध हुआ क्योंकि हर पीढ़ी में कोई न कोई एक सदस्य परिवार को छोड़ कर सन्यासी बन कर इधर-उधर भटकता रहा था। सुन्दरम् के एक चाचा ने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिए थे और उनके बड़े भाई वेंकटेश ने भी वही मार्ग अपनाया था। सुन्दरम् को शायद पता भी नहीं होगा कि स्वयं उनका पुत्र भी एक साधु बन जायेगा, लेकिन कोई नहीं जानता था कि जिसे 'अभिशाप' माना जा रहा था, वही एक दिन समूचे मानव समाज के कल्याण के लिए कृपाकारी आशीर्वाद सिद्ध होगा।

फिर, 1892 में पूरे परिवार पर जैसे एक वज्रपात हुआ। कुछ दिनों की बीमारी के बाद ही अचानक और अप्रत्याशित रूप से सुन्दरम् का देहांत हो गया। अपने पीछे वे पत्नी, तीन पुत्र और एक पुत्री छोड़ गए थे। स्कूल से लौट कर जब बालक वेंकटरमण ने अपने पिता को मृत अवस्था में लेटे हुए पाया तो इस दृश्य का उनके मन पर भारी असर हुआ। उन्होंने पूछा, ''पिताजी तो यहीं लेटे हुए हैं, तो फिर आप लोग यह क्यों कह रहे हैं कि वे मर चुके हैं?'' इस प्रश्न पर उन्होंने अवश्य ही गहन चिंतन-मनन किया होगा क्योंकि यही प्रश्न, यानी मृत्यु का प्रश्न ही था जिसके बारे में वह बाद में आश्चर्यजनक परिणाम पर पहुंचे थे।

इस अचानक और अकाल मृत्यु ने इस एकसूत्रबद्ध परिवार को छिन्न-भिन्न कर दिया। अलगम्माल अपने दो छोटे बच्चों को लेकर मानामदुरै चली गईं। वेंकटरमण सहित दो बड़े बच्चों की देखभाल

की जिम्मेदारी एक सहृदय रिश्तेदार, सुब्बैया अय्यर, ने संभाल ली और वह उन्हें लेकर मदुरै स्थित अपने घर ले गए जहां से नगर का भव्य मीनाक्षी मंदिर साफ़ दिखाई देता था।

वहां, वेंकटरमण को पहले स्कॉट्स मिडिल स्कूल और बाद में एक अमेरिकन मिशन हाई स्कूल में भेजा गया। वह एक ऐसे औसत दर्जे के छात्र रहे जो कि पाठों को आसानी से समझ व याद तो कर लेता था लेकिन पढ़ाई के सांसारिक विषयों में उनकी कभी कोई रुचि नहीं थी। अपनी यादों को खंगालते हुए उन दिनों के बारे में उन्होंने बाद में बताया, ''जब स्कूल में पाठ पढ़ाया जा रहा होता था तब इसलिए कि कहीं मुझे नींद न आ जाए और अध्यापक मेरे कान न खींचे, मैं अपने बालों को एक धागे से बांध कर धागे को दीवार पर लगी एक कील से अटका दिया करता था। झपकी आ जाने पर जब मेरी गरदन लुढ़कती थी तो धागा खिंच जाता था और झट से मेरी आंख खुल जाती थीं।''

मदुरै का वह अमेरिकन मिशन स्कूल जिसमें वेंकटरमण पढ़ने जाया करते थे।

वेंकटरमण को खेलकूद बहुत पसंद थे और वह अपनी आयु के अन्य लड़कों से अधिक बलशाली थे। उन्हें फुटबॉल खेलना भी अच्छा लगता था और लोग कहा करते थे कि जिस टीम में वह होते थे तो कैसी भी हो वह टीम जीत ही जाती थी। इसलिए, वे 'तंगाकई' नाम से मशहूर हो गए जिसका अर्थ होता है 'सोने के हाथ वाला' यानी भाग्यशाली। मदुरै में अपने रिश्तेदार के घर में रहते हुए इस बालक में जल्दी ही एक भारी परिवर्तन आने वाला था जो कि पूरे संसार की आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करने वाला था।

वेंकटरमण को घर के सबसे ऊपर वाला वह कमरा दिया गया जो कि खाली पड़ा रहता था। यहां वह अपने मित्रों के साथ गेंद का 'फेंका-फेंकी' खेल खेला करते थे और रात को चुपके से वेगै नदी या पिल्लैयारपलियम तालाब में तैरने के लिए निकल जाते थे। मदुरै में रहते हुए उन्होंने न तो संस्कृत सीखी और न ही वेद या उपनिषद ही पढ़े क्योंकि वहां के दोनों ही स्कूल ईसाई स्कूल थे, इसलिए वहां उन्होंने केवल बाइबिल पढ़ी थी। युवाकाल से ही, लोगों ने देखा था कि कभी-कभी वह कुछ समाधि जैसी अवस्था में चले जाते थे। एक बार एक अध्यापक ने उन्हें इसलिए बैंच पर खड़े हो जाने को कहा क्योंकि उनका ध्यान पढ़ाई में नहीं था। वेंकटरमण ने उनकी ओर इतनी तेजस्विता और स्थिर भाव से देखा कि वह अध्यापक इतना हतप्रभ हो गया कि उसने इस लड़के को क्षमा ही कर दिया।

मदुरै में उनके स्कूल के पक्के दोस्तों में एक मुस्लिम लड़का भी था जिसका बोलता नाम तो 'साब जान' था लेकिन उसका असली नाम था एम. अब्दुल वहाब। वेंकटरमण बताते थे कि वे अभिन्न मित्र थे। बाद में साब जान ने अपनी यादों के झरोखे से बताया,

'एक छात्र के रूप में वेंकटरमण अत्यंत धार्मिक था'। छुट्टी के दिन वे दोनों अक्सर तिरुपरंकुंरम् जाया करते थे और वहां के खूबसूरत सुब्रमण्य स्वामी मंदिर में घूमा करते थे, इसमें उन्हें परमानंद की अनुभूति हुआ करती थी। साब जान के शब्दों में – ''ईश्वर ने सबको एक समान बनाया है, उसकी सृष्टि में कोई भेद-भाव नहीं है। उन दिनों किसी मस्जिद और उस मंदिर में मुझे तो कोई फ़र्क नहीं लगता था।'' वे दोनों अक्सर मां अलगम्माल से मिलने भी जाया करते थे जहां साब जान को वेंकटरमण की तरह ही प्यार-दुलार मिलता था।

मदुरै में मीनाक्षी के उस भव्य मंदिर के सामने वाले घर में रहते हुए ही वेंकटरमण को खुद में वह गहन आध्यात्मिक जागरण होता अनुभूत हुआ जो कि आने वाले समय में विश्व की आध्यात्मिकता पर व्यापक प्रभाव डालने वाला था। इसका श्रीगणेश नवंबर 1895 को तब हुआ जब सोलह वर्ष की आयु में उन्होंने पहली बार एक पवित्र पर्वत के बारे में सुना जिसे अरुणाचल कहा जाता था।